भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् द्वारा विकसित अनुसंधान निष्कर्षों के विस्तार हेतु नेटवर्क के सशक्तिकरण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला

(दि. 17 अक्टूबर, 2014)

निदेशक उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान के निर्देश पर उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के अंतर्गत अन्य संस्थानों द्वारा विकसित अनुसंधान निष्कर्षों के विस्तार हेतु नेटवर्क के सशक्तिकरण हेतु एक दिवसीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला दिनाँक 17 अक्टूबर, 2014 को मुख्य वन संरक्षक अनुसंधान एवं विस्तार के सहयोग से वन विज्ञान केंद्र. म.प्र.जबलपुर में आयोजित की गई। इसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम में विभिन्न जिलों के कृषक, गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि, स्वःसहायता समूह के सदस्य, वन विभाग के कर्मचारी तथा मध्य प्रदेश राज्य वन विभाग द्वारा चयनित वन दूतों सहित 125 प्रशिक्षाणार्थी उपस्थित रहे।

उदघाटन कार्यक्रम का शुभारंभ परंपरा अनुसार द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। श्री शंखवार, मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान एवं विस्तार ने सभी प्रशिक्षाणार्थियों व विषय विशेषज्ञों का स्वागत करते हुए इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से वन दूतों तथा अन्य उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों से आहवान किया कि वे इस कार्यक्रम में प्राप्त जानकारी को मैदान में साकार करने में अपना योगदान दे। डॉ. नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक – जी तथा प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग, उ.व.अ.सं., नें वानिकी तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यों से सभी उपस्थित प्रशिक्षणार्थीयों को परिचित कराया तथा कार्यक्रम के दौरान प्रदर्शित तकनिकों को अपनाकर अधिक से अधिक जनसमुदायों को परिचित कराने हेतु प्रेरित किया।

डॉ. एन. रायचौधरी वैज्ञानिक- जी द्वारा सागौन के वृक्षारोपण में कीटों का जैविक नियंत्रण और साल वनों में साल बोरर का प्रकोप एवं इसका प्रबंधन एवं डॉ नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक-जी नें वन रोपणियों में श्वेत इल्ली के समन्वित प्रबंधन के बारे में जानकारियाँ उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को दी। श्रीमति नीलू सिंह, वैज्ञानिक – ई नें लघु वनोंपजों को सुखाने की ड्रम ड्रायर तकनीक तथा कालमेघ, सर्पगंधा, अश्वगंधा आदि औषधीय पौधों की कृषि तकनीक के बारे में जानकारी उपस्थित प्रशिक्षार्थियों को दी। डॉ. ननीता बेरी वैज्ञानिक –डी नें संस्थान द्वारा विकसित कृषि वानिकी को अपनाकर सीमित भूमि से अधिक लाभ प्राप्त हेतु जानकारी से प्रशिक्षार्थियों को अवगत् कराया। डॉ. अविनाश जैन, वैज्ञानिक –ई नें खदानों से निकली मिट्टी, लैटेरिटिक मृदा, भाटा एवं परती भूमि, कंकालित मृदा तथा ताप बिजली गृहो द्वारा उत्सर्जित फ्लाई ऐश के जैविक सुधार पर प्रशिक्षण प्रदान किया। डॉ. आर.के. वर्मा, वैज्ञानिक – एफ द्वारा आँवला रोपणी एंव सागौन के बीजोत्पादन क्षेत्र को प्रभावित करने वाले कीट और उन पर लगने वाले रोगों के निदान एवं उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी प्रदान की। सभी प्रशिक्षणार्थियों ने चर्चा में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

उपरोक्त प्रतिवेदन की समस्त सामग्री संस्थान के वन विस्तार प्रभाग द्वारा प्रदाय की गई है।

उपरोक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक संयुक्त रुप से श्री हरिओम शंखवार, नोडल अधिकारी, वन विज्ञान केन्द्र म.प्र., मु.व.स., अनु. एवं विस्तार वृत्त, जबलपुर तथा डॉ. नितिन कुलकर्णी, वैज्ञानिक – जी तथा प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग, उ.व.अ.सं., थे । इस कार्यक्रम में डॉ. एस.एन. मिश्रा, अनुसंधान अधिकारी, वन विस्तार प्रभाग, उ.व.अ.सं., जबलपुर नें सह-समन्वयक के रुप में अपना योगदान दिया । कार्यक्रम का समापन प्रशिक्षणार्थियों द्वारा अपने विचार प्रस्तुत करनें तथा लिखित रुप से फीड़-बैक (Feed back) प्रस्तुत करने से हुआ । कार्यक्रम के अंत में श्री हरीश सोनी, सहायक वन संरक्षक, अनु. एवं विस्तार वृत्त द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया ।

उपरोक्त प्रतिवेदन की समस्त सामग्री संस्थान के वन विस्तार प्रभाग द्वारा प्रदाय की गई है।